SAMPLE QUESTION PAPER - 1

Hindi Core (302)

Class XII (2024-25)

निर्धारित समय: 3 hours **अधिकतम अंक:** 80

सामान्य निर्देश:

- निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए :-
- यह प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभाजित है।
- खंड - क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- खंड - ख में पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- खंड - ग में पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खंड क (अपठित बोध)

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-** (10) **[10]**

लोकतंत्र के तीनो पायों-विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका का अपना-अपना महत्त्व है, किंतु जब प्रथम दो अपने मार्ग या उद्देश्य के प्रति शिथिल होती है या संविधान के दिशा-निर्देशों की अवहेलना होती है, तो न्यायपालिका का विशेष महत्त्व हो जाता है। न्यायपालिका ही है, जो हमें आईना दिखाती है, कितु आईना तभी उपयोगी होता है जब उसमें दिखाई देने वाले चेहरे की विद्रूपता को सुधारने का प्रयास हो। सर्वोच्च न्यायालय के अनेक जनहितकारी निर्णयों को कुछ लोगो ने न्यायपालिका की अतिसक्रियता माना, पर जनता को लगा कि न्यायालय सही है। राजनीतिक चश्मे से देखने पर भ्रम की स्थिति हो सकती है।

प्रश्न यह है कि जब संविधान की सत्ता सर्वोपरि है, तो उसके अनुपालन में शिथिलता क्यों होती है? राजनीतिक दलगत स्वार्थ या निजी हित आड़े आ जाता है और यही भ्रष्टाचार को जन्म देता है। हम कसमें खाते हैं और जनकल्याण की ओर कदम उठाते हैं, आत्मकल्याण के ऐसे तत्त्वो से देश को, समाज को सदा खतरा रहेगा। अतः जब कभी कोई न्यायालय ऐसे फैसले देता है, जो समाज कल्याण के हों और राजनीतिक ठेकेदारों को उनकी औकात बताते हों, तो जनता को उसमें आशा की किरण दिखाई देती है। अन्यथा तो वह अंधकार मे जीने को विवश है ही।

(i) न्यायपालिका का विशेष महत्व कब हो जाता है? (1)

क) जब विधायिका और कार्यपालिका अपने मार्ग से भटक जाती है

ख) जब न्यायपालिका निष्क्रिय हो जाती है

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

ग) जब संविधान बदल जाता है
घ) जब जनता के पास न्याय नहीं होता

(ii) सर्वोच्च न्यायालय के जनहितकारी निर्णयों को किसने न्यायपालिका की अतिसक्रियता माना? (1)

क) जनता ने
ख) न्यायपालिका ने
ग) कुछ लोगों ने
घ) विधायिका ने

(iii) भ्रष्टाचार को जन्म देने वाला मुख्य कारण क्या है? (1)

क) न्यायपालिका की निष्क्रियता
ख) संविधान का अनुपालन
ग) राजनीतिक दलगत स्वार्थ या निजी हित
घ) न्यायपालिका की अतिसक्रियता

(iv) सर्वोच्च न्यायालय के जनहितकारी निर्णयों को जनता ने कैसे माना? (1)
(v) जब संविधान की सत्ता सर्वोपरि है, तो उसके अनुपालन में शिथिलता क्यों होती है? (2)
(vi) न्यायालय के ऐसे फैसलों का महत्व क्या है जो समाज कल्याण के हों? (2)
(vii) न्यायपालिका का आईना दिखाने का क्या महत्व है? (2)

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (8)** **[8]**

अचल खड़े रहते जो ऊँचा शीश उठाए तूफानों में,
सहनशीलता, दृढ़ता हँसती जिनके यौवन के प्राणों में
वही पंथ बाधा को तोड़े बहते हैं जैसे हों निर्झर,
प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर।
आज देश की भावी आशा बनी तुम्हारी ही तरुणाई,
नए जन्म की श्वास तुम्हारे अंदर जगकर है लहराई।
आज विगत युग के पतझर पर तुमको नव मधुमास खिलाना,
नवयुग के पृष्ठों पर तुमको है नूतन इतिहास लिखाना।
उठो राष्ट्र के नवयौवन तुम दिशा-दिशा का सुन आमंत्रण,
जगो, देश के प्राण जगा दो नए प्रातः का नया जागरण।
आज, विश्व को यह दिखला दो हममें भी जागी तरुणाई,
नई किरण की नई चेतना में हमने भी ली अंगड़ाई।।

(i) कविता में 'सहनशीलता, दृढ़ता हँसती जिनके यौवन के प्राणों में' पंक्ति से कवि का क्या अभिप्राय है? (1)

क) युवाओं की शक्ति और उत्साह
ख) युवाओं की मूर्खता

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

ग) युवाओं की उदासीनता
घ) युवाओं की निराशा

(ii) 'प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर' का क्या तात्पर्य है? (1)

क) प्रगति केवल आसान रास्तों पर चलकर ही संभव है
ख) युवाओं का साहस और दृढ़ता प्रगति को वास्तविकता में बदलती है
ग) प्रगति केवल अनुभव से आती है
घ) प्रगति का अर्थ केवल भौतिक समृद्धि है

(iii) 'नवयुग के पृष्ठों पर तुमको है नूतन इतिहास लिखाना' में कवि किससे अपेक्षा कर रहे हैं? (1)

क) वृद्ध लोगों से
ख) बच्चों से
ग) युवाओं से
घ) नेताओं से

(iv) 'नए प्रातः का नया जागरण' का कविता में क्या अर्थ है? (1)
(v) कविता में 'उठो राष्ट्र के नवयौवन' से कवि का क्या संदेश है? (2)
(vi) 'हममें भी जागी तरुणाई' पंक्ति का कवि किस भाव को प्रकट कर रहे हैं? (2)

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. **दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।** **[6]**

(i) **मन चंगा तो कठौती में गंगा** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए। **[6]**

(ii) **इंटरनेट से लाभ और हानियाँ** विषय पर निबंध लिखिए। **[6]**

(iii) **काम अधिक, बातें कम** विषय पर अनुच्छेद लिखिए। **[6]**

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: (2 X 4 = 8)** **[8]**

(i) इंटरनेट की विशेषताएँ बताइए। **[2]**

(ii) नए एवं अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से आप क्या समझते हैं? यह एक चुनौती कैसे है? **[2]**

(iii) फीचर की दो विशेषताएँ बताइए। **[2]**

(iv) नाटक में स्वीकार एवं अस्वीकार की अवधारणा से क्या तात्पर्य है? **[2]**

5. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)** **[8]**

(i) वे कौन से कारण हैं जो किसी भी लेखन को विशिष्ट बना देते हैं? **[4]**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ii) जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में से सबसे पुराना माध्यम कौन-सा है? उसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [4]

(iii) रेडियो और टी.वी. के लिए समाचार लिखते समय किन-किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए? [4]

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** [5]

बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।

(i) पक्षी अपने घर की ओर तेजी से क्यों लौट रहे हैं?

क) सायंकाल हो जाने के कारण
ख) बच्चों की व्याकुलता के कारण
ग) रात के अंधकार के कारण
घ) पैरों की शिथिलता के कारण

(ii) कवि, घर लौटने की शीघ्रता में नहीं दिखाई दे रहा है, क्योंकि:

क) उसके पास घर नहीं है।
ख) वह अपने घर पर ही है।
ग) उसका कोई अपना नहीं है।
घ) वह किसी के लिए चिन्तित नहीं है।

(iii) बच्चे घोंसले से क्यों झाँक रहे हैं?

क) बाहरी भय की आशंका से
ख) भोजन की प्रतीक्षा में
ग) माँ की प्रतीक्षा में
घ) रात हो जाने की आशंका से

(iv) **पैरों का शिथिल होना** - का आशय है:

क) आलस्य होना
ख) रुक जाना
ग) उत्साह नहीं होना
घ) थकावट होना

(v) कवि की बेचैनी का कारण है:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

क) उसका अधूरापन   ख) उसकी भावुकता

ग) उसका आवारापन   घ) उसका अकेलापन

7. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[6]**

(i) **कल्पना के रसायन को पी** से कवि **उमाशंकर जोशी** का क्या आशय है? **[3]**

(ii) **लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप** प्रसंग से ली गई पंक्ति **बोले बचन मनुज अनुसारी** का क्या तात्पर्य है? **[3]**

(iii) **व्याख्या करें-** **[3]**

ज़ोर ज़बरदस्ती से
बात की चूड़ी मर गई
और वह भाषा में बेकार घूमने लगी।

8. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

(i) **पतंग** कविता का प्रतिपाद्य बताइए। **[2]**

(ii) **कैमरे में बंद अपाहिज** कविता से आपकी राय में अपंगों के प्रति कैसा व्यवहार होना चाहिए? **[2]**

(iii) विप्लवी बादल की युद्ध-नौका की कौन-कौन-सी विशेषताएँ बताई गई है? बादल राग के अनुसार बताइए। **[2]**

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति-प्रथा गंभीर दोषों से युक्त है। जाति-प्रथा का श्रम विभाजन मनुष्य की इच्छा पर निर्भर नहीं रहता। मनुष्य की व्यक्तिगत भावना तथा व्यक्तिगत रुचि का इसमें कोई स्थान अथवा महत्त्व नहीं रहता। 'पूर्व लेख' ही इसका आधार है। इस आधार पर हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि आज के उद्योगों में गरीबी और उत्पीड़न इतनी बड़ी समस्या नहीं जितनी यह कि बहुत से लोग 'निर्धारित कार्य को 'अरुचि' के साथ केवल विवशतावश करते हैं। ऐसी स्थिति स्वभावत: मनुष्य को दुर्भावना से ग्रस्त रहकर टालू काम करने और कम काम करने के लिए प्रेरित करती है। ऐसी स्थिति में जहाँ काम करने वालों का न दिल लगता हो न दिमाग, कोई कुशलता कैसे प्राप्त की जा सकती है। अतः यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाता है कि आर्थिक पहलू से भी जाति-प्रथा हानिकारक प्रथा है, क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि व आत्म-शक्ति को दबाकर उन्हें अस्वाभाविक नियमों में जकड़ कर निष्क्रिय बना देती है।

(i) श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति-प्रथा किससे युक्त है?

क) सुखद परिणामों से   ख) सरल दोषों से

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

ग) गंभीर दोषों से | घ) दुःखद दोषों से

(ii) जाति-प्रथा का श्रम विभाजन किस पर निर्भर नहीं रहता?

क) मनुष्य की स्वेच्छा पर | ख) मनुष्य की शिक्षा पर

ग) मनुष्य की समझदारी पर | घ) मनुष्य की गलती पर

(iii) श्रम विभाजन पर मनुष्य की किस भावना का कोई महत्त्व नहीं रहता?

क) व्यक्तिगत भावना | ख) भेदभावपूर्ण भावना

ग) राजनीतिक भावना | घ) सामाजिक भावना

(iv) किसी भी काम में कुशलता कब प्राप्त नहीं होती है?

क) जब तक समाज से सहायता प्राप्त नहीं होती | ख) जब तक व्यक्ति का दिल और दिमाग काम नहीं करता

ग) जब तक व्यक्ति चिताओं से नहीं घिरता है | घ) जब तक परिवार का सहयोग नहीं मिलता

(v) जाति-प्रथा मनुष्य को निष्क्रिय कैसे बना देती है?

क) मनुष्य को आलसी बनाकर | ख) मनुष्य की आत्मशक्ति को दबाकर

ग) मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि को दबाकर | घ) मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि और आत्मशक्ति दोनों को दबाकर

10. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[6]**

(i) **पहलवान की ढोलक** कहानी से क्या संदेश मिलता है? अपने शब्दों में लिखिए। **[3]**

(ii) भक्तिन की चारित्रिक विशेषताओं की व्याख्या कीजिए। **[3]**

(iii) कालिदास ने शिरीष की कोमलता और द्विवेदी जी ने उसकी कठोरता के विषय में क्या कहा है? **शिरीष के फूल** पाठ के आधार पर बताइए। **[3]**

11. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

(i) बाज़ार के जादू से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए। **[2]**

(ii) **काले मेघा पानी दे** पाठ में बारिश करवाने के लिए कौन सा अंतिम उपाय किया जाता है? लेखक इसके लिए क्यों तैयार नहीं होता और जीजी किन तर्कों से इसे सही ठहराती हैं? **[2]**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(iii) **श्रम विभाजन और जाति प्रथा** पाठ के आधार पर लिखिए कि श्रम विभाजन किस आधार पर होना चाहिए और उसके लिए क्या आवश्यक है? **[2]**

12. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[10]**

(i) यशोधर बाबू के व्यक्तित्व की तीन प्रमुख विशेषताएँ लिखते हुए समझाइए कि नई पीढी के लिए इन्हें अपनाना क्यों उपयुक्त है। **सिल्वर वैडिंग** के आधार पर लिखिए। **[5]**

(ii) वसंत पाटील कौन है? लेखक आनंद यादव ने उससे दोस्ती क्यों व कैसे की? **[5]**

(iii) मुअनजोदड़ो की नगर योजना आज की सेक्टर-मार्का कॉलोनियों के नीरस नियोजन की अपेक्षा अधिक रचनात्मक है-टिप्पणी कीजिए। **[5]**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Solution

SAMPLE QUESTION PAPER - 1

Hindi Core (302)

Class XII (2024-25)

खंड क (अपठित बोध)

1. (i) क) जब विधायिका और कार्यपालिका अपने मार्ग से भटक जाती है

(ii) ग) कुछ लोगों ने

(iii) ग) राजनीतिक दलगत स्वार्थ या निजी हित

(iv) जनता ने सर्वोच्च न्यायालय के जनहितकारी निर्णयों को सही माना।

(v) संविधान के अनुपालन में शिथिलता इसलिए होती है क्योंकि राजनीतिक दलगत स्वार्थ या निजी हित आड़े आ जाते हैं, जो भ्रष्टाचार को जन्म देते हैं।

(vi) न्यायालय के ऐसे फैसलों का महत्व यह है कि वे समाज कल्याण के हों और राजनीतिक ठेकेदारों को उनकी औकात बताते हों, जिससे जनता को आशा की किरण दिखाई देती है।

(vii) न्यायपालिका का आईना दिखाने का महत्व यह है कि वह समाज को उसकी विद्रूपता को सुधारने का अवसर प्रदान करता है।

2. (i) क) युवाओं की शक्ति और उत्साह

(ii) ख) युवाओं का साहस और दृढ़ता प्रगति को वास्तविकता में बदलती है

(iii) ग) युवाओं से

(iv) 'नए प्रातः का नया जागरण' का अर्थ है एक नए दिन की शुरुआत, जो नई ऊर्जा, चेतना, और जागरूकता के साथ समाज और राष्ट्र में परिवर्तन लाने की क्षमता रखती है।

(v) कविता में 'उठो राष्ट्र के नवयौवन' से कवि युवाओं को प्रेरित कर रहे हैं कि वे अपनी ऊर्जा और उत्साह का उपयोग करके देश के पुनर्निर्माण और प्रगति में योगदान दें। यह एक आह्वान है कि वे राष्ट्र की दिशा बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

(vi) 'हममें भी जागी तरुणाई' पंक्ति में कवि युवाओं की नई जागरूकता और उभरती हुई ऊर्जा को व्यक्त कर रहे हैं। यह भाव दर्शाता है कि युवा अब सोए हुए नहीं हैं; वे अब जाग चुके हैं और समाज में परिवर्तन लाने के लिए तैयार हैं।

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।

(i) **मन चंगा तो कठौती में गंगा**

यह विषय एक महत्वपूर्ण विचार है जो हमें मानसिक एवं आध्यात्मिक स्थिरता की ओर प्रेरित करता है। मानवीय जीवन में आनंद और खुशहाली की खोज में, यह कहावत एक मार्गदर्शक सिद्धांत प्रस्तुत करती है। इसका अर्थ है कि जब हमारा मन शुद्ध और स्थिर होता है, तब हम जीवन की कठिनाइयों को सुगमता से पार कर सकते हैं। गंगा को साफ और पवित्र माना जाता है, जिससे हमारे मन को उद्धार, शुद्धि और संतुलन मिलता है। इस लेख में, हम देखेंगे कि यदि हमारा मन प्रशांत, आत्मनिर्भर और स्वच्छ हो, तो हम सभी जीवन की उच्चतम सत्ताओं को अनुभव कर सकते हैं। हम यह भी विचार करेंगे कि मन को कैसे चंगा बनाया जा सकता है और इसे कठौती में गंगा की तरह कैसे परिणीत किया जा सकता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ii) **इंटरनेट से लाभ और हानियाँ**

परिचय: आज के डिजिटल युग में इंटरनेट हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गया है। यह एक ऐसा माध्यम है जिसने संचार, शिक्षा, व्यापार और मनोरंजन के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। लेकिन इसके साथ ही इंटरनेट के कुछ नुकसान भी हैं। इस निबंध में हम इंटरनेट के लाभ और हानियों पर चर्चा करेंगे।

इंटरनेट के लाभ:

सूचना का भंडार: इंटरनेट पर हमें किसी भी विषय पर जानकारी आसानी से मिल जाती है। यह शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में बहुत उपयोगी है।

संचार: इंटरनेट ने संचार को बहुत आसान और सुलभ बना दिया है। ईमेल, सोशल मीडिया, और वीडियो कॉलिंग के माध्यम से हम दुनिया के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति से तुरंत संपर्क कर सकते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा: इंटरनेट ने शिक्षा के क्षेत्र में भी क्रांति ला दी है। ऑनलाइन कोर्स, वेबिनार और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से हम घर बैठे ही उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

मनोरंजन: इंटरनेट ने मनोरंजन के साधनों को भी बदल दिया है। ऑनलाइन गेम्स, मूवी स्ट्रीमिंग, और म्यूजिक स्ट्रीमिंग के माध्यम से हम अपने खाली समय का आनंद ले सकते हैं।

व्यापार: इंटरनेट ने व्यापार के क्षेत्र में भी नए अवसर खोले हैं। ई-कॉमर्स वेबसाइट्स के माध्यम से हम घर बैठे ही खरीदारी कर सकते हैं और अपने उत्पादों को वैश्विक बाजार में बेच सकते हैं।

इंटरनेट की हानियाँ:

गोपनीयता का खतरा: इंटरनेट पर हमारी व्यक्तिगत जानकारी का दुरुपयोग हो सकता है। हैकिंग और साइबर अपराधों के कारण हमारी गोपनीयता खतरे में पड़ सकती है।

आसक्ति: इंटरनेट की अत्यधिक उपयोगिता के कारण लोग इसके आदी हो सकते हैं, जिससे उनकी शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

गलत जानकारी: इंटरनेट पर कई बार गलत और भ्रामक जानकारी भी मिलती है, जिससे लोग भ्रमित हो सकते हैं और गलत निर्णय ले सकते हैं।

सामाजिक अलगाव: इंटरनेट के अत्यधिक उपयोग से लोग सामाजिक रूप से अलग-थलग पड़ सकते हैं। वे वास्तविक जीवन में कम समय बिताते हैं और आभासी दुनिया में अधिक समय बिताते हैं।

सुरक्षा खतरे: इंटरनेट पर वायरस और मैलवेयर का खतरा भी बना रहता है, जिससे हमारे कंप्यूटर और डेटा को नुकसान हो सकता है।

इंटरनेट के लाभ और हानियाँ दोनों ही हैं। यह हमारे जीवन को आसान और सुविधाजनक बनाता है, लेकिन इसके साथ ही हमें इसके दुष्प्रभावों से भी सावधान रहना चाहिए। हमें इंटरनेट का उपयोग सोच-समझकर और संतुलित तरीके से करना चाहिए ताकि हम इसके लाभों का पूरा फायदा उठा सकें और हानियों से बच सकें।

(iii) **काम अधिक, बातें कम**

"काम अधिक, बातें कम" एक ऐसा सिद्धांत है जो हमें अपने जीवन में अनुशासन और उत्पादकता को बढ़ाने के लिए प्रेरित करता है। इस सिद्धांत का पालन करने से हम अपने लक्ष्यों को अधिक प्रभावी ढंग से प्राप्त कर सकते हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

सबसे पहले, यह सिद्धांत हमें समय की महत्ता को समझने में मदद करता है। जब हम अधिक बातें करते हैं और कम काम करते हैं, तो हमारा समय व्यर्थ चला जाता है। इसके विपरीत, जब हम अपने कार्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं और कम बातें करते हैं, तो हम अपने समय का सदुपयोग कर सकते हैं और अधिक उत्पादक बन सकते हैं।

दूसरे, "काम अधिक, बातें कम" का पालन करने से हमारी कार्यक्षमता बढ़ती है। जब हम अपने कार्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं और अनावश्यक बातों से बचते हैं, तो हम अपने कार्यों को अधिक कुशलता से पूरा कर सकते हैं। इससे न केवल हमारे कार्यों की गुणवत्ता बढ़ती है, बल्कि हम समय पर अपने लक्ष्यों को भी प्राप्त कर सकते हैं।

तीसरे, यह सिद्धांत हमें आत्म-अनुशासन सिखाता है। जब हम अपने कार्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं और कम बातें करते हैं, तो हम अपने जीवन में अनुशासन को बढ़ावा देते हैं। यह अनुशासन हमें हमारे व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में सफलता प्राप्त करने में मदद करता है।

अंत में, "काम अधिक, बातें कम" का पालन करने से हम एक सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं। जब हम अपने कार्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं और कम बातें करते हैं, तो हम दूसरों को भी प्रेरित कर सकते हैं कि वे भी अपने कार्यों पर ध्यान केंद्रित करें और अधिक उत्पादक बनें।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: (2 X 4 = 8)

(i) इंटरनेट में प्रिंट मीडिया, रेडियो, टेलीविजन, किताब, सिनेमा यहाँ तक कि पुस्तकालय के भी सारे गुण मौजूद हैं। यह एक 'अंतर क्रियात्मक' (इंटरेक्टिव) माध्यम है। इसमें आप मूक दर्शक/श्रोता नहीं हैं।

(ii) नए तथा अप्रत्याशित विषयों के लेखन में आत्मपरक 'मैं' शैली का प्रयोग किया जा सकता है। यद्यपि निबंधों और अन्य आलेखों में 'मैं' शैली का प्रयोग लगभग वर्जित होता है किंतु नए विषय पर लेखन में 'मैं' शैली के प्रयोग से लेखक के विचारों और उसके व्यक्तित्व को झलक प्राप्त होती है।

(iii) **फीचर की दो उल्लेखनीय विशेषताएँ निम्न है-**

i. फीचर का विषय चर्चित एवं जनरुचि पर आधारित होता है।

ii. फीचर सुगठित, क्रमबद्ध एवं रोचक होना अनिवार्य है। उसमें औत्सुक्य, जिज्ञासा तथा भावनाओं को जागृत करने की क्षमता होनी चाहिए।

(iv) नाटक में स्वीकार के स्थान पर अस्वीकार का अधिक महत्त्व होता है। नाटक में स्वीकार तत्व के आ जाने से नाटक सशक्त हो जाता है। कोई भी दो चरित्र जब आपस में मिलते हैं तो विचारों के आदान-प्रदान में टकराहट पैदा होना स्वाभाविक है। रंगमंच में कभी भी यथास्थिति को स्वीकार नहीं किया जाता। वर्तमान स्थिति के प्रति असंतुष्टि, छटपटाहट, प्रतिरोध और अस्वीकार जैसे नकारात्मक तत्वों के समावेश से ही नाटक सशक्त बनता है।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)

(i) कोई भी लेखन करते समय यह ध्यान देना जरूरी है कि हमारा पाठक, दर्शक या श्रोता कौन है, हमारी बातें उन्हें समझ में आ रहीं हैं या नहीं, हमारे तर्क और तथ्य आपस में मेल खा रहे हैं कि नहीं। हमारी अभिव्यक्ति उनकी जिज्ञासा या समस्या का समाधान करने सक्षम हो ये लेखन को विशिष्ट बनाने के लिए अति आवश्यक है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ii) जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में से सबसे पुराना माध्यम मुद्रित माध्यम है। उसकी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

i. मुद्रित माध्यम में स्थायित्व होता है।

ii. उसे लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

iii. सुविधानुसार उसे बार-बार पढ़ सकते हैं।

(iii) रेडियो और टी.वी. के लिए समाचार लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

i. सहज, सरल, आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

ii. छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करना आवश्यक है।

iii. निम्नलिखित, अधोहस्ताक्षरित, क्रमांक आदि शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए।

iv. अनावश्यक विशेषणों और शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए।

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।

(i) **(ख)** बच्चों की व्याकुलता के कारण

व्याख्या:

बच्चों की व्याकुलता के कारण

(ii) **(ग)** उसका कोई अपना नहीं है।

व्याख्या:

उसका कोई अपना नहीं है।

(iii) **(ग)** माँ की प्रतीक्षा में

व्याख्या:

माँ की प्रतीक्षा में

(iv) **(ग)** उत्साह नहीं होना

व्याख्या:

उत्साह नहीं होना

(v) **(घ)** उसका अकेलापन

व्याख्या:

उसका अकेलापन

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) कवि के लिए रचनाकर्म तथा कवि-कर्म समानधर्म प्रक्रिया है। जिस प्रकार खेत में खाद्यान्न उत्पादित करने के लिए किसान बीज, जल तथा रसायनों का उपयोग करता है, उसी प्रकार एक कवि रचना के सृजन के लिए शब्द रूपी बीज को पन्नों पर डालता है। शब्दों को भाव, संवेदना के जल से सिंचित कर कल्पना के रसायन से उसे उर्वर बनाता है। रचना कल्पना के रसायन को पीकर आनंद-रस से परिपूर्ण हो जाती है। यहाँ कवि रचना के लिए कल्पना अत्यंत महत्वपूर्ण है। उसका मानना है कि कल्पना के रसायन से रचना अधिक परिपक्व तथा अनंतता को प्राप्त होती है।

(ii) **लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप** प्रसंग से ली गई पंक्ति **बोले बचन मनुज अनुसारी** का आशय है कि युद्ध क्षेत्र में हुए लक्ष्मण को देखकर एक साधारण मनुष्य के अनुसार बोलने लगे अर्थात् कवि का आशय यह है कि लक्ष्मण के मूर्छित होने पर श्रीराम का हृदय इतना व्याकुल हो उठा कि वे एक साधारण मानव की तरह विलाप करने लगे। वे लक्ष्मण को देखकर करुण दशा में बोल पढ़े कि आधी रात व्यतीत हो गई है लेकिन अभी तक हनुमान जी औषधि लेकर नहीं आए।

(iii)कवि कहते हैं कि एक बार वह सरल कथ्य की अभिव्यक्ति करते समय भाषा को अलंकृत करने के चक्कर में ऐसा फँस गया कि वह अपनी मूल बात को प्रकट ही नहीं कर पाया। जिस प्रकार जोर -जबरदस्ती करने से कील की चूड़ी मर जाती है और तब चूड़ीदार कील को चूड़ीविहीन कील की तरह ठोंकना पड़ता है उसी प्रकार कथ्य के अनुकूल भाषा के अभाव में कथन का प्रभाव नष्ट हो जाता है और अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) इस कविता में कवि ने बालसुलभ इच्छाओं व उमंगो का सुंदर वर्णन किया है। पतंग बच्चों की उमंग व उल्लास के रंग-बिरंगा सपनों का प्रतीक है। शरद ऋतु में मौसम सुहावना और आकाश साफ़ हो जाता है। चमकीली धूप बच्चों को आकर्षित करती है। वे इस मनोरम मौसम में पतंगे उड़ाते हैं। आसमान में उड़ती हुई पतंगों को उनका बालमन छूना चाहता है। उनके पीछे भागते-दौड़ते बच्चे गिर-गिर कर भी सँभलते हैं। पतंगों के लिए दौड़ते हुये बच्चों के कोलाहल से चारों दिशाएँ मानो मृदंग की आवाज़ से गुंजित हो जाती हैं, उनकी कल्पनाएँ पतंगों के सहारे आसमान को पार करना चाहती हैं। प्रकृति भी उनका सहयोग करती है, तितलियाँ उनके सपनों को रंगीला बनाती है।

(ii) अपंग दया के नहीं, अपितु स्नेह के पात्र है। हमें उनके साथ यह सोचकर व्यवहार करना चाहिए कि यदि हम इनके स्थान पर होते, तो हमारी समाज से क्या अपेक्षा होती? हमारा व्यवहार उनके साथ सहयोगात्मक होना चाहिए। उनकी अपंगता की सीमा को हमें अपने व्यवहार से दूर करना चाहिए; जैसे-अंधा व्यक्ति सड़क पार करना चाहता है, तो हमें उसे पकड़कर सड़क पार करानी चाहिए न कि उसे ऐसे ही छोड़ देना चाहिए।

(iii)'बादल राग' कविता में कवि ने विप्लवी बादल की युद्ध-नौका की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं-

i. यह समीर-सागर में तैरती है।
ii. यह भेरी-गर्जन से सजग है।
iii. इसमें ऊँची आकांक्षाएँ भरी हुई हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति-प्रथा गंभीर दोषों से युक्त है। जाति-प्रथा का श्रम विभाजन मनुष्य की इच्छा पर निर्भर नहीं रहता। मनुष्य की व्यक्तिगत भावना तथा व्यक्तिगत रुचि का इसमें कोई स्थान अथवा महत्त्व नहीं रहता। 'पूर्व लेख' ही इसका आधार है। इस आधार पर हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि आज के उद्योगों में गरीबी और उत्पीड़न इतनी बड़ी समस्या नहीं जितनी यह कि बहुत से लोग 'निर्धारित कार्य को 'अरुचि' के साथ केवल विवशतावश करते हैं। ऐसी स्थिति स्वभावत: मनुष्य को दुर्भावना से ग्रस्त रहकर टालू काम करने और कम काम करने के लिए प्रेरित करती है। ऐसी स्थिति में जहाँ काम करने वालों का न दिल लगता हो न दिमाग, कोई कुशलता कैसे प्राप्त की जा सकती है। अतः यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाता है कि आर्थिक पहलू से भी जाति-प्रथा हानिकारक प्रथा है, क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि व आत्म-शक्ति को दबाकर उन्हें अस्वाभाविक नियमों में जकड़ कर निष्क्रिय बना देती है।

(i) **(ग)** गंभीर दोषों से

व्याख्या:

गंभीर दोषों से

(ii) **(क)** मनुष्य की स्वेच्छा पर

व्याख्या:

मनुष्य की स्वेच्छा पर

(iii) **(क)** व्यक्तिगत भावना

व्याख्या:

व्यक्तिगत भावना

(iv) **(ख)** जब तक व्यक्ति का दिल और दिमाग काम नहीं करता

व्याख्या:

जब तक व्यक्ति का दिल और दिमाग काम नहीं करता

(v) **(घ)** मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि और आत्मशक्ति दोनों को दबाकर

व्याख्या:

मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि और आत्मशक्ति दोनों को दबाकर

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) पहलवान की ढोलक कहानी से हमें संघर्ष, समर्पण और विजय के महत्वपूर्ण संदेश मिलते हैं। यह कहानी दिखाती है कि सफलता के लिए कठिनाइयों का सामना करना, निरंतर प्रयास करना और संघर्ष को नहीं हारने देना आवश्यक होता है। यह एक प्रेरणादायक कहानी है जो हमें जीवन के मुश्किल समयों में आगे बढ़ने का साहस देती है।

(ii) भक्तिन के माध्यम से लेखिका ने एक भारतीय नारी का दिलचस्प और संवेदनशील चित्रण करने का प्रयत्न किया है। उसका कद छोटा और शरीर दुबला-पतला था। उसके होंठ पतले और आँखें छोटी थीं। वह गरीब की तरह दिखाई देती थी। 50 वर्ष की होने पर भी वह वृद्ध नहीं दिखाई देती थी। भक्तिन एक संघर्षशील तथा स्वाभिमानी स्त्री है। वह परिस्थितियों से डरती नहीं, बल्कि उनका मुकाबला करती है। पति की मृत्यु के बाद वह खेत में कड़ा परिश्रम करके अपनी बेटियों

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

का पालन-पोषण करती है। वह शास्त्रों के तर्कों द्वारा दूसरों को अपने मन के अनुकूल बना लेने में भी निपुण थी। इस प्रकार कहा जा सकता है कि भक्तिन कर्तव्य-परायण, संघर्षशील, स्वाभिमान आदि गुणों से युक्त होने के साथ-साथ सामान्य मनुष्य की भाँति असत्य वादन, हेरा-फेरी आदि दुर्गुणों से भी युक्त थी।

(iii) कालिदास और संस्कृत साहित्य ने शिरीष को बहुत कोमल माना है। कालिदास का कथन है- 'शिरीष पुष्प केवल भौंरों के पदों का कोमल दबाव सहन कर सकता है, पक्षियों का बिलकुल नहीं।' लेकिन इससे हज़ारी प्रसाद द्विवेदी सहमत नहीं हैं। उनका विचार है कि इसे कोमल मानना भूल है। इसके फल इतने मज़बूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नए फल-पत्ते मिलकर, धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते, तब तक वे डटे रहते हैं। वसंत के आगमन पर जब सारी वनस्थली पुष्प-पत्र से मर्मरित होती रहती है, तब भी शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते रहते हैं।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) बाज़ार दर्शन से आशय है-बाजार के बारे में विवरण; जैसे-बाजार में क्या-क्या मिलता है? बाजार से लोग क्यों आकर्षित होते हैं? बाज़ार के आकर्षण से बचने के क्या-क्या उपाय हैं? बाज़ार के गुण-दोषों का वर्णन, बाज़ार की सार्थकता इत्यादि के बारे में विस्तृत जानकारी देना, बाजार के लाभ व हानि के बारे में रोचक ढंग से बताना आदि इसमें शामिल हैं।

(ii) **काले मेघा पानी दे** पाठ में बारिश करवाने के लिए अंतिम उपाय के रूप में गाँव के बच्चे इंदर सेना/मेंढक मंडली घर-घर जाकर पानी माँगते हैं और पानी की कमी होने पर भी, कठिनाई से इकठ्ठा किया हुआ पानी लड़कों पर फेंकने को लेखक पानी की निर्मम बर्बादी मानता है। उसके अनुसार यह पाखंड और अन्धविश्वास है। जीजी के अनुसार यह पानी की बरबादी नहीं, बल्कि पानी का अर्घ्य देना है क्योंकि उनके अनुसार जब हम पानी दान करेंगे तो बदले में हमें पानी मिलेगा। वे दान-पुण्य में त्याग का महत्त्व मानती है।

(iii) श्रम विभाजन व्यक्ति के स्वभाव और रूचि पर आधारित होना चहिए। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता के विकास का पूरा अधिकार है। इस प्रकार के व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार होता है तो समाज उन्नति करता है। समाज के अभी सदस्यों को यदि आरंभ से ही समान अवसर और समान व्यवहार उपलब्ध कराए जाए तो व्यक्ति रूचि से कार्य करेगा। इस प्रकार का व्यवहार उचित और व्यवहारिक है।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) यशोधर बाबू के व्यक्तित्व की तीन प्रमुख विशेषताएँ हैं-

- समय की पाबंदी
- कार्यनिष्ठा
- आदर्शवादी जीवन मूल्यों के प्रति आस्था

नई पीढ़ी के लिए इन विशेषताओं को अपनाना आवश्यक और उपयुक्त है। उसके कारण निम्न हैं-

- व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए
- लक्ष्य प्राप्ति के लिए

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

- आदर्श नागरिक बनने के लिए

(ii) वसंत पाटील दुबला-पतला, परंतु होशियार लड़का था। वह स्वभाव से शांत था तथा हर समय पढ़ने में लगा रहता था। वह घर से पूरी तैयारी करके आता था तथा उसके सभी सवाल ठीक होते थे। वह दूसरों के सवालों की जाँच करता था। उसे कक्षा का मॉनीटर बना दिया गया था। वह हमेशा पहली बेंच पर मास्टर के पास बैठता था। कक्षा के सभी छात्र उसका सम्मान करते थे। लेखक भी उसकी देखा देखी मेहनत करने लगा। उसने बस्ता व्यवस्थित किया, किताबों पर अखबारी कागज का कवर चढ़ाया तथा हर समय पढ़ने लगा। उसके सवाल भी ठीक निकलने लगे। वह भी वसंत पाटिल की तरह लड़कों के सवाल जाँचने लगा। इस तरह दोनों दोस्त बन गए तथा एक-दूसरे की सहायता से कक्षा के अनेक काम करने लगे।

(iii) मुअनजो-दड़ो की सड़कों और गलियों का विस्तार खंडहरों को देखकर किया जा सकता है। यहाँ हर सड़क सीधी है या फिर आड़ी। चबूतरे के पीछे ‘गढ़ उच्च वर्ग की बस्ती, महाकुंड, स्नानागार, ढकी नालियाँ, अन्न का कोठार, सभा भवन, घरों की बनावट, भव्य राजप्रासाद, समाधियाँ आदि संरचनाएँ ऐसे सुव्यवस्थित हैं कि कहा जा सकता है कि शहर नियोजन से लेकर सामाजिक संबंधो तक में इसकी कोई तुलना नहीं है। वर्तमान की सेक्टर-मार्का कॉलोनियों में आड़ा-सीधा नियोजन बहुत मिलता है जो रहन-सहन को नीरस बनाता है तथा इसमें नियोजन के नाम पर हमें अराजकता ज्यादा हाथ लगती है। अतः कहा जा सकता है की आज की सेक्टर-मार्का कॉलोनियां इनके सामने बिलकुल फीकी हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in